॥नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

वुत्तोदयं

१. सञ्ञापरिभासानिद्देस-पठमपरिच्छेद

रतनत्तयप्पणाम

१. नम'त्थु जन सन्तान, तम सन्तान भेदिनो।
धम्मु'ज्जलन्त रुचिनो, मुनिन्दो'दात रोचिनो॥

निमित्त

२. पिङ्गला'चरियादीहि, छन्दं य मुदितं पुरा।
सुद्धमागधिकानं तं, न साधेति यथिच्छितं [य'दिच्छितं यति'च्छितं (क॰)]॥

गन्थपरिमाण

३. ततो मागधभासाय, मत्ता,वण्ण,विभेदनं।
लक्ख्य लक्खण संयुत्तं, पसन्न'त्थ,पद,क्कमं॥

अभिधानादि

४. इदं **वुत्तोदयं** नाम, लोकिय'च्छन्दनिस्सितं।
आरभिस्स'महं दानि, तेसं सुखविबुद्धिया॥

गणसङ्केतसञ्ञा

५. सब्बग्ला म्ना,'दिगलहू, **भ्या**',मज्झ'न्त गरू **जसा।**
मज्झ'न्तला **र,ते**'ते'ट्ठ, गणा गो गरु,लो लहु॥

गणनियम

६. भ,ज,सा सब्बग,लहू, पञ्चि'मे सण्ठिता गणा।
अरियादिम्हि विञ्ञेय्या, गणो इध चतु'क्कलो॥

गरु,लहुसरूप

७. संयोगा'दि च, दीघो च, निग्गहीतपरो च, यो।

गरु, वङ्को, पादन्तो,वा, रस्सो’ञ्ञो मत्तिको **लु**’जु॥

८. परे पादादिसंयोगे, यो पुब्बो गरुक’क्खरो।
लहु स क्वचि विञ्ञेय्यो, तदुदाहरणं यथा॥

९. दस्सनरसा’नुभावने, निबद्धगेधा जिनस्स’यं जनता।
विम्हयजननी सञ्ञ**त, क्रि**या नु कं ना’नुरञ्जयति॥

१०. विञ्ञेय्या लोकतो सञ्ञा, **समुद्दो,सु,रसा**दिनं।
पादोञेय्यो चतुत्थं’सो, पदच्छेदो **यती** भवे॥

११. **सम,मड्ढसमं,** वुत्तं, **विसमं** चा’परं तिधा।
समा लक्खणतो पादा, चत्तारो यस्स तं **समं॥**

१२. यस्स’न्तिमेन दुतियो, ततियेना’दिमो समो।
त’**दड्ढसम, मञ्ञं** तु, भिन्न लक्खण पादिकं॥

१३. पाद’मेकक्खरा’रब्भ, याव छब्बीसत’क्खरा।
भवे पादेहि तं छन्दं, नानानामो’दितं ततो॥

१४. **दण्डका** चण्डवुट्ठ्या’दि, पादेहि छहि, तीहि तु।
‘गाथा’ति च परत्थे’वं, छन्दो सञ्ञा पकासिता॥

१५. अनन्तरो’दितं च’ञ्ञ, मेतं सामञ्ञ नामतो।
‘गाथा’इच्चेव निद्दिट्ठं, मुनिन्दवचने पन॥

१६. विसेसनामतो किञ्चि, गहेत्वा सब्बथो’चितं।
दस्सयिस्साम’हं ते’त्थ, नामाना’वि भविस्सरे॥

इति वुत्तोदये छन्दसि सञ्ञापरिभासा निद्देसो नाम

पठमो परिच्छेदो।

२. मत्तावुत्तिनिद्देस-दुतियपरिच्छेद

गणनियम

१७. छट्ठो’खिललहु,जो वा,

गयुता'ञ्ञे,छ'ग्गणा,न जो विसमे, ।
अरियाय'न्तट्ठे लो, छट्ठो,'न्ते गो,गणा छ'ञ्ञे॥

यतिनियम

१८. पठमट्ठे छट्ठो चे,
सब्बलहे,'त्था'दिलहुनि भवतियति।
तप्परको,न्तोपि, सचे, चरिमेपि, भवति चतुत्थो'न्ते॥

१९. **अरियासामञ्ञं** चे, पुब्बो'दित लक्खणं भवे यस्सा।

२०. आदिम'मथ पादयुगं, यस्सा त्यं'सेहि सा **पथ्या।**

२१. यत्थ गणत्तय मुल्लङ्घि,
यो'भयत्था'दिमो भवे **विपुला॥**

२२. गरुमज्झगो जकारो, चतुत्थको दुतियको **चपला।**

२३. चपला'गता'खिलं चे, दला'दिमं लक्खणं भजति यस्सा।
पथ्यालक्खण'मञ्ञं, **मुखचपला** नाम सा भवति॥

२४. पथ्याय लक्खणं चे, पठमट्ठे लक्खणं तु चपलाय।
दुतिये दले'थ यस्सा, पकित्तिता सा **जघनचपला॥**

अरियाजातियो।

२५. सब्बंपठमदले यदि, लक्खण'मरियाय वुत्त'मुभयेसु।
यस्सा दलेसु युत्तं,
वुत्ता सा **गीति** वुत्त यति ललिता॥

२६. अरियायं दुतिय'ड्ढे, गदिता'खिललक्खणं यं तं।
भवति दलेसु'भयेसुपि,
यदि यस्सा सा'य **मुपगीति॥**

२७. अरियाय'ड्ढद्वितयं, पुब्बोदित लक्खणो'पेतं।
विपरिययेना'भिहितं,
यस्सा सम्भवति चे'ह सो'**ग्गीति॥**

२८. अरियापुब्ब'ड्ढं यदि, गरुने'केना'धिकेन निधने युत्तं।
यदि पुब्ब'ड्ढसमानं, दल मितरं चो'दिता'य'**मरियागीति॥**

गीतिजातियो।

२९. विसमे छ सियुं कला मुखे,
समे त्व'ट्ठ, र,ल,गा, ततो'परि।
वेतालीयं त मुच्चते, लहु छक्कं न निरन्तरं समे॥

३०. वेतालीयोपमं मुखे तं,
ओपच्छन्दसकं र,या य'दन्ते॥

३१. **आपातलिका** कथिता'यं, भगगा'न्ते यदि पुब्बमिव'ञ्ञं।

३२. यदा'दितो **दक्खिणन्तिका,**
ठिते'त्थ पादेस्वा'खिलेसु जो॥

३३. **'उदिच्चवुत्ती'**ति वुच्चते,
जो चा'दो विसमेसु सण्ठितो॥

३४. पुब्बत्थ, समेसु चे ग, जा, **'पच्चवुत्ति'** रुदिता'ति सण्ठिता।

३५. समासमा'त्रा'दिनं समा,
संयुता भवति तं **पवत्तकं॥**

३६. अस्स सा सम कता' **परन्तिका।**

३७. तद'ञ्ञजा **चारुहासिनी।**

वेतालीयजातियो।

३८. द्विक विहत वसु लहु **अचलधिति** रि'ह।

३९. **मत्तासमकं** नवमो ल्ग'न्ते।

४०. जो न्ला' थवा'ण्णवा **विसिलोको।**

४१. तद्वयतो **वानवासिका'**ख्या।

४२. पञ्च,ट्ठ,नवसु यदि लो **चित्रा।**

४३. ग,ल्या'ट्ठहि चे'सा वु'**पचित्रा।**

४४. य'मतीत लक्खण विसेस युतं, (चित्रा)
मत्ता समा'दि पादा'भिहितं। (विसिलोक)
अनियत वुत्त परिमाण सहितं, (वानवासिका)
पथितं जनेसु **पादाकुलकं॥** (विसिलोक)

मत्तासमक जातियो।

४५. विना वण्णेहि मत्ता गा, विना वण्णा गरूहि तु।
विना लहूहि गरवो, दले पथ्यादिनो मता॥

इति वुत्तोदये छन्दसि मत्तावुत्तिनिद्देसो नाम

दुतियो परिच्छेदो।

३. समवुत्तिनिद्देस-ततियपरिच्छेद

४६. त्या' चे **तनुमज्झा।**

गायत्ती।

४७. **कुमार ललिता** ज्स्गा।

उण्हिका।

४८. **चित्रपदा** यदि भा गा।

४९. मो मो गो गो **विज्जुम्माला।**

५०. भा त, ल, गा **माणवकं।**

५१. ग्ला **समानिका** र,जा च।

५२. **पमाणिका** ज, रा ल, गा।

अनुट्ठुभा।

५३. रा न,सा यदि **हलमुखी।**

५४. **भुजग सुसु सटा** ना मो।

ब्रहती।

५५. म्साज्गा **सुद्धविराजितं** मतं।

५६. म्ना यो गो यदि **पणवो** ख्यातो।

५७. म्भा स,गयुत्ता **रुम्मवती** सा।

५८. ञेय्या **मत्ता** म, भ, स, गयुत्ता।

५९. **चम्पकमाला** चे भ, म, सा गो [इदं नामन्तरञापनत्थमेव पुन वुत्तं (टी॰)]।

६०. न, र, ज, गेहि सा **मनोरमा।**

६१. **उब्भासकं** तं चे तो म, रा ल्च।

६२. तो जा गरुना'य'**मुपट्ठिता।**

पन्ति।

६३. **इन्दा**दिका ता **वजिरा** ज, गा गो।

६४. **उपादि**का सा'व ज,ता ज,गा गो।

६५. अनन्तरो'दीरित लक्खणा चे, (उपेन्दवजिर)
पादा विमिस्सा **उपजातियो** ता। (इन्दवजिर)
एवं किल'ञ्ञासुपि मिस्सितासु, (इन्दवजिर)
वदन्ति जातिस्विद' मेव नामं॥ (उपेन्दवजिर)

६६. न, ज, ज, ल, गा गदिता **सुमुखी।**

६७. **दोधक** मिच्छति चे भ,भ,भा गा।

६८. वेद,स्सेहि,ध्ता त्गागा,**सालिनी** सा।

६९. **वातोम्मी** सा, यति सा म्भा त, गा गो।

७०. भा त, न, गा गो'सु, रस **सिरी** सा।

७१. रो न, रा इह **रथोद्धता** ल, गा।

७२. **स्वागते**'ति र, न, भा गरुका द्वे।

७३. न,न,र,लहु,गरूहि **भद्दिका।**

तिट्ठुभा।

७४. वदन्ति **वंसट्ठमि**'दं ज, ता ज, रा।

७५. सा **इन्दवंसा** खलु यत्थ ता ज,रा।

७६. इध **तोटक** मम्बुधि,सेहि मितं।

७७. **दुतविलम्बित** माह न, भा भ,रा।

७८. वसु युग विरती ना,म्या' **पुटो**'यं।

७९. न, य, सहिता न्या' **कुसुमविचित्ता।**

८०. **भुजङ्ग'प्पयातं** भवे वेद, येहि।

८१. न, भ, ज, रेहि भवति'**प्पियंवदा।**

८२. वुत्ता सुधीहि **ललिता** त, भा ज, रा।

८३. **पमितक्खरा** स, ज, स,सेहु'दिता।

८४. न,न,भ,र,सहिता'भिहितु'**ज्जला।**

८५. पञ्च'स्स'च्छिन्ना, **वेस्सदेवी** म,मा या।

८६. भवति हि **तामरसं** न, ज, जा यो।

८७. '**कमला**'ति ञेय्या स,य,सेहि यो चे।

जगती।

८८. म्ना ज्रा गो, तिदसयति'**प्पहस्सिणी** सा।

८९. चतु,ग्गहे,हि'ह **रुचिरा,** ज,भा स्ज,गा।

अतिजगती।

९०. न,न,र,स,लहु,गा,सरेहि' **पराजिता।**

९१. न,न,भ,न,ल,गि'ति,**प्पहरणकलिका।**

९२. वुत्ता **वसन्ततिलका** त,भ,जा ज,गा गो।

सक्करी।

९३. द्विहत हय लहु र'थ गि'ति **ससिकला।**

९४. वसु,हय,यति रि'ह,**मणिगुणनिकरो।**

९५. न,न,म,य,य,युता'यं,**मालिनी** भोगि'सीहि।

९६. भवति न,जा,भ,जा रसहिता **पभद्दकं।**

अतिसक्करी।

९७. न,ज,भ,ज,रा सदा भवति **वाणिनी** ग, युत्ता।

अट्ठि।

९८. य, मा नो सो भल्गा, रस, हरविरामा **सिखरणी।**

९९. रस, युगि, सितो, नो सो म्रा स्ला, ग्य'दा **हरिणी** तदा।

१००. **मन्दक्कन्ता,** म,भ,न,त,त,गा, गो युगु,त्व,स्सकेहि।

अच्चट्ठि।

१०१. मो तो नो यो या, **कुसुमितलता, वेल्लिता'** क्खु,त्वि,सीहि।

धुति।

१०२. रसु,त्व,स्सेहि य्मा, न,स,र,र,गरू, **मेघविप्फुज्जिता** सा।

१०३. अक्कस्सेहि यति म्स,जास,त,त,गा, **सद्दूलविक्कीळितं।**

अतिधुति।

१०४. **वुत्त** मीदिसं तु नामतो र,जा र,जा र,जा गरू,लहू च।

कति।

१०५. म्रा भ्रा यो यो'त्र येन,त्ति,मुनि, यतियुता, **सन्धरा** कित्तिता'यं।

पकति।

१०६. ओ न,र,ना र,ना च थ गरू दस,क्क,विरमञ्हि **भद्दक'** मिदं।

आकति।

इति वुत्तोदये छन्दसि समवुत्तिनिद्देसो नाम

ततियो परिच्छेदो।

४. अड्ढसमवुत्तिनिद्देस-चतुत्थपरिच्छेद

१०७.विसमे यदि सा स,ल,गा समे,
भ,त्तयतो गरुका वु'**पचित्तं॥**

१०८.भ,त्तयतो यदि गा **दुतमज्झा।**
यदि पुनरे'व भवन्ति न, जा **ज्या॥**

१०९.यदि स,त्तितयं गरुयुत्तं,
वेगवती यदि भ,त्तितया गा॥

११०.तो जो विसमे रतो गरू चे।
स्मा ज्गा **भद्दविराज** मेत्थ गो चे॥

१११. विसमे स, जा स,गरु,युत्ता।
केतुमती समे भ,र,न,गा गो॥

११२. **आख्यानकी** ता विसमे ज, गा गो। (इन्दवजिर)
ज,ता ज,गा गो तु समे'थ पादे॥ (उपेन्दवजिर)

११३.ज,ता ज,गा गो विसमे समे तु। (उपेन्दवजिर)

ता जो ग,गा चे **विपरीतपुब्बा॥** (इन्दवजिर)

११४.स,स,तो स,ल,गा विसमे समे।
न,भ,भ,रा भवते **हरिणप्लुता॥**

११५.यदि न,न,र,ल,गा न,जा ज,रा,
यदि च तदा'**परवत्त** मिच्छति॥

११६. विसम मुपगता न,ना र,या चे।
न,ज,ज,र,गा समके च **पुप्फितग्गा॥**

द्वयं मिदं **वेतालीय**'प्पभेदो।

११७.सा **यवा**दिका **मती** र,जा र,जा त्व,
समे समे ज,रा ज,रा गरू भवेय्युं॥

इति वुत्तोदये छन्दसि अड्ढसमवुत्तिनिद्देसो नाम

चतुत्थो परिच्छेदो।

५. विसमवुत्तिनिद्देस-पञ्चमपरिच्छेद

११८. न'ट्ठक्खरेसु पादेसु, स्ना'दिम्हा यो'ण्णवा **वत्तं।**

११९. समेसु सिन्धुतो जेन, **पथ्यावत्तं** पकित्तितं।

१२०. ओजेसु जेन सिन्धुतो, त'मेव **वीपरीता'दि।**

१२१. न,कारो चे जलधितो, **चपलावत्त**'मिच्चे'तं।

१२२. समे लो सत्तमो यस्सा, **विपुला** पिङ्गलस्स सा।

१२३. **सेतव**स्सा'खिलेसुपि।

१२४. भेन'ण्णवा **भ'ब्बिपुला।**

१२५. एव'**मञ्ञा रो** चतुत्था।

१२६. नो'ण्णवा चे **नविपुला।**

१२७. तो'ण्णवा तथा'**ञ्ञा** सिया।

वत्त'प्पभेदो।

१२८.नदिस्सते'त्थ यं छन्दं, पयोगे दिस्सते यदि।
विसम'क्खरपादं तं, **गाथा** सामञ्ञनामतो॥

इति वुत्तोदये छन्दसि विसमवुत्ति निद्देसो नाम

पञ्चमो परिच्छेदो।

६. छप्पच्चयविभाग-छट्ठपरिच्छेद

पत्थारनय

१२९.पत्थारे सब्बगे पादे, पुब्बगा'धो ल्प'रे समा।
पुब्बे गरु ते च मिमे, कत्तब्बा याव सब्बला॥

नट्ठनय

१३०.नट्ठस्स यो भवेय्य'ङ्को, तस्मिं लो'द्धिकते समे।
विसमे त्वे'कसहिते, भवेय्य'द्धिकते गरु॥

उद्दिट्ठनय

१३१.एका'दिनुक्कमेन'ङ्के, पुब्बाधो द्विगुणे लिखे।
मिस्सकेहि लहुट्ठेहि, से'केहु'द्दिट्ठकं भवे॥

सब्बगलक्रियनय

१३२.वुत्त'क्खर समा सङ्ख्या, लिक्ख्य सेको'परू'परि।
एकेकहीन मेकादि, नु'ट्ठाने सब्बगादिकं॥

वुत्तसङ्ख्यानय

१३३.गरुक्रिया'ङ्क सन्दोहे, भवे सङ्ख्या विमिस्सिते।
उद्दिट्ठ'ङ्क समाहारो, से'को वे'मं समा'नये॥

वुत्तअद्धानय

१३४.सङ्ख्येव द्विगुणे'कूना, वित्थारा'यामसम्भवा।
वुत्तस्स'द्ध'न्तरानञ्च, गरुलानञ्च अङ्गुलं॥

इति वुत्तोदये छन्दसि छप्पच्चयविभागो नाम

छट्ठो परिच्छेदो।

निगमन

१३५.सेल'न्तरा'यतन वासिक **सील**'त्थेर,
पादो गरु ग्गुणगरु ज्जयतं ममे'सो।
यस्स प्पभाव'मवलम्ब मये'दिसोपि,
सम्पादितो'भिमत सिद्धिकरो परत्थो॥

१३६.परत्थ सम्पादनतो, पुञ्ञेना'धिगतेन'हं।
परत्थ सम्पादनको, भवेय्यं जाति जातियं॥

१३७.अवलोकित मत्तेन, यथा छप्पच्चया मया।
साधिता साधयन्ते'व, मिच्छितत्थम्पि पाणिनोति॥

इति सङ्घरक्खितमहासामित्थेरेन विरचितं

वुत्तोदयप्पकरणं परिनिट्ठितं।